P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय ग्रामीण समाज में उभरती वर्गसंरचना एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

अमित मलिक
विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
डी.ए.वी. कालेज,
मुजफ्फरनगर

सारांश

जाति व्यवस्था भारतीय सामाजिक संरचना का अहम् यदि कहा जाए कि आधार स्तंभ है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नही है। वर्तमान में जैसे–जैसे हम परमपरा से आधुनिकता की ओर अग्रसर है वैसे ही जाति व्यवस्था के इतर एक वर्गीय व्यवस्था का प्रचलन उभरकर सामने आया है। यथा लोग अब गॉव में संगठन हेतु जाति व्यवस्था पर ही निर्भर ना होकर समान आर्थिक या व्यवसायिक स्थिति के चलते भी संगठित हो रहे है। अर्थात अब आर्थिक आधार तथा वर्गीय चेतना भी महत्वपूर्ण सामाजिक मानदण्ड बन गई है और यह समान वर्ग चेतना एक ऐसे भारतीय समाज का प्रतीक है जो परम्परा से आधुनिकता की ओर अग्रसर है।

मुख्य शब्द : प्रौद्योगिकी विकास, भारतीय सामाजिक व्यवस्था।

प्रस्तावना

भारतीय ग्रामीण समाज परम्परागत रुप से जातियों में विभक्त रहा है। भारतीय ग्रामीण संरचना जाति आधारित सामाजिक संरचना ही है। लेकिन जैसे–जैसे हम परम्परा से आधुनिकताकी ओर बढ रहे है। धीरे–2 जाति व्यवस्था भी वर्ग व्यवस्था की ओर परिवर्तित हो रही है। आर्थिक सम्बन्धो, भू स्वमित्व तथा सामाजिक परिस्थिति के आधारपर परम्परागत तथा वर्तमान ग्रामीण वर्ग संरचना के बीच एक स्पष्ट अन्तर देखने को मिलता है। ग्रामीण वर्ग–संरचना में होने वाले वर्तमान परिवर्तन को समझने के लिए पहले यहॉ की परम्परागत वर्ग संरचना को समझना आवश्यक है। गॉव में जिस समूह को आज हम कृषक वर्ग कह रहे है कुछ समय पहले तक उसे हम कृषक जातियां कहा करते थे तथा उससे तक केवल कृषि मजदूरकी थी। गाडगिल ने ग्रामीण क्षेत्रो में केवल दो शक्तिशाली वर्गो का ही उल्लेख किया है। साहूकार, व्यापारी वर्ग तथा खेती करने वाले भू–स्वामी वर्ग।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ग्रामीण समाज के अध्ययन के द्वारा यह ज्ञात करना है कि जाति व्यवस्था तथा जाति समूह के अतिरिक्त वर्ग व्यवस्था की अवधारणा भी विकसित हुई है। जिसका आधार सामाजिक न होकर आर्थिक है तथा आर्थिक स्थिति तथा समान व्यवसाय के चलते किस प्रकार की चेतना जाग्रत हुई है।

जब हम भारत में सामाजिक वर्गो की प्रकृति की देखते है तो यहां सामाजिक वर्गो की संरचना को पश्चिमी समाजो के आधार पर नही समझा जा सकता है। भारत में बहुत–बहुत प्राचीन काल से ही यहॉ की वर्ग संरचना प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से वर्ग और जाति पर आधारित संस्तरण से प्रभावित रही है। यहां की सामाजिक व्यवस्था जन्म पर आधारित होने के कारण विभिन्न समूहों की आर्थिक और सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण में उनकी योग्यता और प्रयत्नो को अधिक महत्व नही रहा। सम्पूर्ण समाज वर्णो और जातियों में विभाजित होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति को अपने आनुवशिक व्यवसायके द्वारा आजीविका उपार्जित करना आवश्यक था। इसके फलस्वरुप परम्परागत रुप से भारतीय समाज चार प्रमुख वर्गो में विभाजित था पुरोहित वर्ग, शासक वर्ग, पूंजीपति अथवा व्यापारी वर्ग तथा सेवा वर्ग। भारत में जब अग्रेंज आये तो अनेक ऐसी दशायें पैदा होने लगी जिनके प्रभाव से यहॉ की वर्ग सरंचना में कुछ परिवर्तन होना आरम्भ हो गया। शिक्षा प्रणाली में भी बहुत परिवर्तन हुआ। आवागमन के साधनो में विस्तार होने लगा। प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था ने नया रुप ले लिया तथा संगठित बाजारो की स्थापना होने से आर्थिक सम्बन्धो की प्रकृति बदलने लगी। इन दशाओं के फलस्वरुप उच्च जातियों के प्रभाव में कमी आयी तथा सामाजिक और

आर्थिक सम्बन्धो की प्रकृति बदलने लगी। अंग्रेजी शासनकाल में भारत में अनेको परिवर्तन हुए। इनमें से एक नयी जमींदारी प्रथा का उदय भी था। इससे समाज में एक ऐसे उच्च वर्ग का निर्माण हुआ जिसमें ब्राहमण, ठाकुर और वैश्य जैसी सभी जातियों का समावेश था। इसके बाद भी यह सच है कि अंग्रेजो के आने तक भारत की वर्ग संचरना का परम्परागत रुप ही दिखायी देता रहा।

भारत के आजाद होने के बाद भारत को एक धर्मनिरपेक्ष समताकारी और कल्याणकारी राज्य घोषित किया गया। इस समय में सामाजिक आर्थिक नियोजन के द्वारा औद्योगिक विकास के अतिरिक्त ग्रामीण विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाने लगी। विभिन्न सामाजिक कानूनो के द्वारा निम्न जातियों पर लगी सभी परम्परागत निर्योग्यताओं को समाप्त कर दिया जाये। भूमि सुधार के पहले कदम के रुप में जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन हो गया। नगरो में व्यवसायिक क्रियाओं का क्षेत्र बढने से एक बडी ग्रामीण जनसंख्या ने नगरो की ओर प्रवास करना प्रारम्भ कर दिया। एक ओर नयी प्रशासनिक व्यवस्था लागू हुई तो दूसरी ओर संविधान द्वारा अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के लोगो को बडे से बडे पदो पर नियुक्त होने का अवसर मिलने लगा। कुछ समय पहले तक जो भारतीय समाज मुख्यतः उच्च और निम्न वर्गो में विभाजित था वही नयी दशाओं के प्रभाव से मध्यम वर्ग का तेजी से विस्तार होना आरम्भ हुआ। केवल नगरो में ही नही ग्रामीण क्षेत्रो में भी वर्ग सरंचना में तेजी से परिवर्तन होने लगे।

अतः भारतीय गांवो में उभरती नयी वर्ग सरंचना के अध्ययन के लिए तेजलहेडा नामक गांव को चुना गया। यह मुजफ्फरनगर जनपद का एक कृषि प्रधान गांव है। मुजफ्फरनगर 2013 के साम्प्रदायिक दंगो के कारण भारत के नक्शे पर उभरकर सामने आया। मुजफ्फरनगर पहलेसे ही अपनी मिठास के लिए भी जाना जाता है क्योंकि मुजफ्फरनगर में एशिया की सबसे बडी गुडमण्डी है। तेजलहेडा गांव में तीन प्रमुख कृषक जातियां निवास करती है। इसमें जाट, गुर्जर तथा झोझा है। धार्मिक आधार पर विश्लेषण करे। तो जाट तथा गुज्जर दोनो हिन्दु जातियां है जबकि झोझा मुस्लिम जाति है। सेवक जातियों में नाई, धोबी, कुम्हार, गडरिया, कश्यप, बढई, लोहार, तेली है जबकि ब्राहमणो का एक वर्ग पुरोहिताई करता है तो दूसरा वर्ग खेती भी करता है। वर्गो के आधार पर गॉव की जातियों की संरचना को निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

क्रम संख्या	समाजिक वर्ग	समाजिक वर्ग में समाहित जातियां
1.	कृषक वर्ग	जाट, गुज्जर, झोझा, ब्राहमण
2.	धार्मिक वर्ग	हिन्दूवर्ग, मुस्लिम वर्ग
3.	हिन्दू वर्ग	जाट, गुज्जर, ब्राहमण, बनिया, सुनार, जुलाहा, चमार, बाल्मिकी, बढई, नाई, गडरिया, कुम्हार, कश्यप, गोसाई
4.	मुस्लिम वर्ग	झोझा, तेली, सक्का, लोहार, नाई
5.	कृषि श्रमिक वर्ग	चमार, जुलाहा, सक्का
6.	पुरोहित वर्ग	ब्रहामण, मौलवी, गौसाई
7.	व्यापारी वर्ग	बनिया, सुनार, ब्राहमण, जाट, गुज्जर, चमार, झोझा
8.	सेवक वर्ग (कारीगर वर्ग)	जुलाहा, नाई, बढई, लोहार, धोबी, बाल्मिकी, दर्जी, वेल्डिंग वाले।
9.	जातीय वर्ग	प्रत्येक जाति का अपना एक संगठन
10.	स्रकारी सेवा वर्ग	प्रत्येक जाति में से सरकारी सेवाओं में कार्यरत लोगो का स्थानीय वर्ग

उपरोक्त सारणी के आधार पर हमें निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होते है।

1. कृषि आधारित गांव होने के कारण गांव में एक कृषक वर्ग निर्माण स्वतः हो गया है। जिसमें जाट, गुज्जर, झोझा तथा ब्राहमण जाति के लोग जुडे है।
2. धार्मिक आधार पर बात करे तो गांव में दो धार्मिक वर्ग है–हिन्दुवर्ग व मुस्लिम वर्ग।
3. तीसरा वर्ग हिन्दु वर्ग है जिसमें गांव में निवास करने वाले सभी हिन्दु जातियां है।
4. चौथा वर्ग मुस्लिम धर्म को मानने वाली जातियों का है।
5. एक वर्ग कृषिश्रमिक वर्ग है। जिसमें चमार, जुलाहा, सक्का जातियों का लोग है। मजदूरी बढवाने तथा अपने हितो की रक्षा के लिए एक संगठन बनाये हुए है।
6. पुरोहित वर्ग में ब्राहमण जाति के लोग है। जो पूजा पाठ का आयोजन कराते है। वहीं मन्दिरो को देख रेख का कार्य गोसाई जाति के लोग करते है। मस्जिदो का कार्य मौलवी देखते है।
7. गांव में दुकान आदि कार्यो को करने वाले लोगो का एक वर्ग है। इसमें बनिया, सुनार, ब्राहमण, जाट, गुज्जर, चमार, झोझा जाति के लोग शामिल है।
8. गॉव में तकनीकी कार्यो को करने वाले तथा सेवा कार्य करने वालो लोगो का भी एक वर्ग बना है। लोग अपने हितो के प्रति जागरुक है तथा इस वर्ग के लोगो में भी हम की भावना विकसित हो गया है।
9. एक वर्ग जातीय स्तर पर भी है। प्रत्येक जाति के सदस्यो में हम की भावना बनी हुई है। जातीय संगठन भी बनाये गये है।
10. गंव में रहने वाले लोगो में से अनेक लोग सरकारी सेवाओं में लगे है। ये लोग विभिन्न जातियों से सम्बन्धित है लेकिन इन लोगो ने भी एक सामाजिक वर्ग का निर्माण कर लिया है तथा शादी समारोह में

ये लोग इस वर्ग के लोगो को निमन्त्रण करना नही भूलते है।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यात्मक चीजो से पता लगता है कि गांव में उन जातीय सरंचना से बाहर भी एक वर्गीय संरचना का निर्माण हो रहा है जो भारतीय ग्रामीण समाज में उभरती वर्ग संरचना का ही उदाहरण है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Dr. G.K. Aggarwal 2018: Sociology of India, SDPD Publication Agra.*
2. *Singh J.P. 1985: Patten of Rural Urban migration in India. P.H.I. publication New Delhi-110001*
3. *Pandey, Rajendra. 1983: "Continuity and change in Caste System in Rural India" Social change, New Delhi, Vol.13 (sept), p:3*
4. *Mandal, Bipin Bibari 1962: Occupational mobility, "American Sociological Review, Vol.1, No.-4, Aug. 94-201)*
5. *Singh J.P. 2003: Sociology: Concept and theories. P.H.I. publication New Delhi-110001.*
6. *Singh Yogendra, 1986 Modernization of India Traditional. Rawat Publication, Jaipur, Rajasthan.*

.